डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmtjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–17 अप्रैल, 2020)

कृष्ण भक्ति काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों का वर्णन

मध्यकालीन भक्ति–साहित्य में कृष्णभक्ति की एक समृद्ध परंपरा रही है। हिन्दी में पुष्टिमार्ग एवं वल्लभाचार्य के 'षुद्धाद्वैत' के दार्षनिक सिद्धांतों का प्रचलन मुख्य रूप में रहा है। वल्लभाचार्य संप्रदाय का दार्षनिक सिद्धांत 'षुद्धाद्वैत' तथा साधना मार्ग पुष्टिमार्ग कहलाता है। पुष्टिमार्ग का आधार–ग्रंथ ''श्रीमद्भागवत'' है। पुष्टिमार्ग के 'जहाज' व षीर्षस्थ कवि के रूप में सूरदास का नाम स्वीकृत है। इनके अतिरिक्त कृष्णभक्ति साहित्य में अन्य संप्रदाय के कवि भी जुड़े थे। जैसे निम्बार्क संप्रदाय से जुड़े कवि श्री भट्ट, व्यास हरिदेव आदि। राधा वल्लभ संप्रदाय से जुड़े कवि हित हरिवंष आदि। हरिदासी संप्रदाय के संस्थापक स्वामी हरिदास प्रथम और अंतिम कवि के रूप में षामिल थे। चैतन्य संप्रदाय से जुड़े मुख्य कवि गदाधर भट्ट थे। इनके अलावे कुछ संप्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्त भी थे, जिनमें मीरा और रसखान मुख्य हैं। इन सबमें सूरदास षीर्षस्थ एवं सर्वोत्कृष्ट कवि हैं।

कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएं :–

1. कृष्ण का ब्रह्म रूप में चित्रण : कृष्णभक्त कवियों के आराध्य विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण हैं। कृष्णभक्ति काव्य में कृष्ण की विविध लीलाओं का गान रूप में सरस एवं विराट् वर्णन मिलता है। कृष्ण के बाल्यकाल एवं किषोरावस्था की विविध लीलाओं का निरूपण इन कवियों ने बड़ी तल्लीनता के साथ किया है। लीलाओं का मुख्य प्रयोजन ब्रह्म स्वरूप कृष्ण की लीला का आनंद है। इसका दूसरा मुख्य प्रयोजन समाज में व्यापक रूप से व्याप्त कबीर के निर्गुण निराकार ब्रह्म से सगुण साकार ब्रह्म की आर जनसाधारण का ध्यान आकृष्ट करना था। इसीलिए श्रीकृष्ण की 'बाल लीला' और 'किषोर लीला' को अद्भुत मनोहारी और लोकरक्षक रूप का चित्रण कृष्ण भक्त कवियों ने किया। लीला का तीसरा प्रयोजन भगवान और भक्त के बीच की दूरी को मिटाना था। इसीसे सूरदास ने सखा भाव से कृष्ण को देखा और मीरा ने अपने बिल्कुल निकट परिवार के सदस्य या पति–रूप में कृष्ण को देखा।

कृष्णलीला को कृष्णभक्त कवियों ने अनेक रूपों में कल्पित किया है। बाल–गोपाल की वात्सल्यपूर्ण लीलाएं, सखा भाव की लीलाएं, गो–चारण की लीलाएं, माधुर्य भाव से परिपूर्ण लीलाएं आदि समग्रता से संपूर्ण हिन्दी के कृष्णभक्ति काव्य में व्याप्त है। इनमें माखन–दधी लीला, रासलीला, गोपियों संग क्रीड़ाएं, ब्रज के कुंजों का विहार, यमुनातट की लीलाएं, गाय चराने की लीलाएं, सखाओं के संग खेलने आदि का व्यापक वर्णन मिलता है। इन लीलाओं के द्वारा कवियों ने ब्रह्म के सहज, स्वाभाविक रूप को मानवीय जीवन से जोड़ दिया है।

2. **<u>बाल लीला व वात्सल्य वर्णन</u>** :– कृष्ण की बाललीला वर्णन के बहाने सूर ने वात्सल्य भाव की भक्ति विविध रूपों में प्रस्तुत की है। कृष्ण की षिषुलीला, बाल–क्रीड़ाएं और बालक के नटखट स्वभाव का वर्णन सूर ने जिस रूप में किया है, वह सभी घरों के बच्चों के मनोभावों से मिलता है। इसलिए वह विष्व साहित्य में अद्वितीय और अतुलनीय है। बाल लीला से जुड़े कुछ चित्र हैं –

'मैया मोरि मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पांछे तूने मधुवन मोहिं पठायो।
अरि मैया मोरि मैं कब माखन खायो।'

X X X

यषोदा हरि पालने झुलावै,
हलरावै दुलरावै जोई–सोई कछु गावै।

X X X

घुटुरुवनि चलत रेणु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।

बालक का किलकना, घुटनों के बल दौड़ना, लड़खड़ाते हुए चलना, ताली बजाना, चन्द्रमा को पाने के लिए ललकना, दही और मक्खन चुराना, गोपियों के साथ आहार–विहार करना, गो–चारण आदि प्रसंग बेहद मनभावन और मनोवैज्ञानिक हैं। सूर ने वात्सल्य को उत्कर्ष देकर एक अलग रस के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनके इस तरह के वर्णन से आलोचकगण भी अचंभित हैं कि कोई अंधा इस तरह का वर्णन कैसे कर सकता है। बालक कृष्ण के सूक्ष्म हावों, भावों, विभावों और मनोभावों के वणनों को देखकर विद्वजनों के बीच उनके अंधे न होने का संदेह पैदा हो गया।

3. <u>विषय–वस्तु की मौलिकता</u> :– कृष्णभक्ति काव्य का मूल आधार 'श्रीमद्भागवत' पुराण है। बावजूद इसके कवियों ने अपनी मौलिकता का भी परिचय दिया है। भागवत के कृष्ण निर्लिप्त हैं और गोपियों की प्रार्थना पर लीला में षरीक होते हैं, जबकि हिन्दी कवियों के कृष्ण गोपियों की ओर स्वयं उन्मुख होते हैं और अपनी लीलाओं से गोपियों के हृदय को जीत लेते हैं। भागवत में कृष्ण के साथ प्रेम करने वाली एक गोपी का वर्णन है, जबकि यहां हजारों गोपियां हैं। भागवत में सर्वप्रिय राधा का नामोल्लेख तक नहीं है, जबकि 'राधा' कृष्ण के साथ–साथ हिन्दी काव्य की भी आत्मा है। भक्तिकाल से पूर्व विद्यापति के राधा–कृष्ण के प्रेम वर्णन में जिस तरह की स्थूलता है, वह यहां नहीं है। हिन्दी में सूर और मीरा आदि कवियों ने राधा–कृष्ण के चित्रण में जिस अलौकिक भव्यता को प्रस्तुत किया है, वह मौलिक और अद्वितीय है।

4. <u>भक्ति का स्वरूप</u> :– कृष्णभक्ति के सभी आचार्यों ने षंकराचार्य के अद्वैतवाद और मायावाद का खंडन किया है। जीवन और जगत की सत्यता एवं ईष्वर के सगुण साकार रूप की भक्ति को इनलोगों ने स्थापित किया। ब्रह्म के सगुण रूप को विषेष मान्यता दी गयी और विष्णु के अनेक अवतारों में 'राम' और 'कृष्ण' को विराटता प्रदान की गयी।

जगत और जीव की सत्यता स्थापित करने के लिए मायावाद का खंडन किया और ब्रह्म के अवतारवाद को स्थापित करने के लिए ईष्वर के मनमोहक स्वरूप के साथ लोक की विषिष्ट महिमा का बखान किया गया। इसके अतिरिक्त जाति–कुल का भेद अमान्य करते हुए उनकी दृष्टि कृष्ण पर ही केन्द्रित रही। वल्लभाचार्य का मानना है कि भक्ति में भगवान के महात्म्य का ज्ञान सुदृढ़ और सतत प्रेम का है। यही मुक्ति का सरल उपाय है।

5. <u>प्रेम–सौंदय और श्रृंगार का वर्णन</u> :– कृष्णकाव्य में प्रेम–सौंदर्य और श्रृंगार का अद्‌भुत चित्रण मिलता है। बाललीलाओं में वात्सल्य–प्रेम के साथ कृष्ण के समग्र हावों, भावों, अनुभावों आदि में उनके बाल–सौंदर्य का अद्वितीय दर्षन होता है, वहीं किषोर लीलाओं में राधा–कृष्ण और कृष्ण तथा गोपियों के बीच का वर्णन अद्‌भुत सौंदर्य से मंडित है। कृष्ण काव्य में भक्ति के बाद प्रेम–सौंदर्य और श्रृंगार की प्रधानता मिलती है। सूर का सौंदर्य वर्णन अलंकारिक है, जिसमें हमें सौंदर्य की एक उत्कृष्ट दृष्टि और विविध उपमानों की कल्पना का चमत्कार मिलता है। कृष्ण के वात्सल्य रस से युक्त सौंदर्य का एक चित्र है–

'षोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुवन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।

इसी तरह राधा और कृष्ण के प्रथम मिलन पर प्रेम और सौंदय का अद्‌भुत अतुलनीय चित्र देखने को मिलता है। कृष्ण राधा से पहली बार मिलते हैं और प्रेम का पहला स्फूरण किस रूप में घनीभूत हो उठता है, इसका एक चित्र द्रष्टव्य है–

बूझत ष्याम कौन तू गोरी।
कहां रहति काकी तू बेटी, देखी नहीं कबहूं ब्रज खोरी।

कृष्ण काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्षों का खुलकर वर्णन हुआ है। संयोग में मिलन सुख की अनुभूति और वियोग में मिलन की आकांक्षा से परिपूर्ण विरह की व्यापकता का विराट चित्रण कवियों ने प्रस्तुत किया है। सूर की गोपियां विरह में रोती हैं तो कपड़े नहीं धुलती हैं, क्योंकि उसमें कृष्ण के मिलन का गंध और उसकी याद मौजूद है। गोपियां रोती हैं तो उनके आंसुओं से नाला का प्रवाह बढ़ जाता है। यमुना के साथ पेड़–पौधे भी सूखने और मुर्झाने लगते हैं। मीरा कहती हैं–

'मैं तो हरि दर्शन की प्यासी,
मेरा दरद न जाणै कोय।

प्राकृतिक सौंदर्य के बीच कृष्ण काव्य अवस्थित है। कृष्ण ब्रजभूमि में ही अवतरित हुए हैं और उनका पूरा व्यक्तित्व प्रकृति की गोद में विकसित हुआ है। बाल लीलाओं से लेकर लोक–मंगलकारी कार्यो की कर्मभूमि भी प्रकृति ही रही है। राधा–कृष्ण के मिलन का दृष्य, यमुना की कछारें, कदम्ब, करील, निकुंज, लता, चन्द्रमा, गोचारण आदि सभी मन मोहक दृष्य हैं। प्रकृति आलंबन और उद्दीपन दोनों रूपों में उपस्थित है।

6. <u>नारी मुक्ति का स्वर</u> :–भक्ति आंदोलन में कृष्ण काव्यधारा ही एक मात्र ऐसी धारा है, जिसमें नारी मुक्ति का स्वर मिलता है। भक्तिकाल के निर्गुण–सगुण दोनों ही काव्यधारा को सूक्ष्मता पूर्वक देखें तो पता चलेगा की नारी के प्रति भक्तिकालीन कवियो की

दृष्टि कितनी बुरी थी। कबीर ने कहा 'नारी की झांई परै तो अंधा होत भुजंग।' तुलसी ने तो 'तारण की अधिकारिणी' के रूप में देखा। सामंतो की नजर में नारी महज एक नौकर और भोग की वस्तु भर थी। ऐसे में नारी मुक्ति का सबसे प्रखर स्वर मीराबाई में दिखलाई पड़ता है, तो हम उसे क्रांतिकारी व विद्रोही कदम ही कहेंगे। मीरा ने पहली बार अपने ससुराल के घर को त्यागकर नारी मुक्ति का परिचय दिया। इसके अलावे उसने खुलेआम सत्संगों में भाग लेकर नारी की स्वतंत्रता का परिचय दिया। तत्कालीन सामंती समय और समाज में पुरुष वर्चस्ववादी धारणाओं के बीच मीरा ने विद्रोह कर समग्र नारी समुदाय के बीच नारी की स्वतंत्रता का मिषाल कायम किया। यह अपने आप में क्रांतिकारी कदम है।

7. <u>भाषा और शिल्प</u> :— कृष्णभक्ति काव्य में मुख्य रूप से ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। ब्रजभाषा की कोमलता और गीतात्मकता की प्रमुखता है। भाषा में संगीतात्मकता, गीति षैली, लालित्य तथा माधुर्य के व्यवहार से काव्य में स्वाभाविकता, संप्रेषणीयता, सहज भाव—बोधगम्यता की अभिव्यक्ति मिलती है। काव्य रूप की दृष्टि से 'मुक्तक' की प्रधानता है। प्रबंध कम है। वस्तुतः इन कवियों ने कृष्ण के जीवन के जिस अंष को अपने काव्य का विषय बनाया, वह मुक्तक काव्य के लिए उपयुक्त था। षैली की दृष्टि से प्रायः वर्णन गीतिमय है। सरल ग्रामीण चित्रण में वाच्यार्थ तथा विरह के प्रसंग में लाक्षणिकता की भरमार का अपना महत्त्व है। कुछ ठेठ षब्दों में भी मार्मिक अर्थ प्रकट किया गया है, जो उनके भाषा पर विषेष अधिकार होने का संकेत करता है। अलंकारों का प्रयोग साधन रूप में काव्य—सौंदर्य में वृद्धि के लिए किया गया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कृष्णभक्ति काव्य में सगुण भक्ति, प्रेम, सौंदर्य, संगीत, नारी—मुक्ति, कला और दर्षन आदि विषेषताओं का साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। कृष्णभक्ति काव्य में काव्यकला के साथ संगीतकला विकसित हुई। इस काव्य ने एक ओर ललितकलाओं का समग्र विकास किया, वहीं ब्रज की संस्कृति और ब्रजभाषा की सृजनात्मक संभावनाओं के साथ नारी—मुक्ति का द्वार खोल दिया। अतिषय दुःख और पीड़ा के इस काल में कृष्णभक्ति काव्य ने लोकरंजन, आषा और उल्लास की व्यापक भावभूमि तैयार की।

दिनांक : 17/04/2020 **— डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**